गुप्त कलीसिया–7

स्वर्गदूत, दुष्टात्माएं तथा आत्मिक युद्ध

डॉ. डेविड प्लॉट

Part 6

याकूब 1:13–14, "जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फंसकर परीक्षा में पड़ता है।"

लूका 8:12–15, "मार्ग के किनारे के वे हैं, जिन्होंने सुना; तब शैतान आकर उनके मन में से वचन उठा ले जाता है कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार पाएं। चट्टान पर के वे हैं कि जब सुनते हैं, तो आनन्द से वचन को ग्रहण तो करते हैं, परन्तु जड़ न पकड़ने से वे थोड़ी देर तक विश्वास रखते हैं और परीक्षा के समय बहक जाते हैं। जो झाड़ियों में गिरा, यह वे हैं जो सुनते हैं, पर आगे चल कर चिन्ता और धन, और जीवन के सुख विलास में फंस जाते हैं और उनका फल नहीं पकता। पर अच्छी भूमि में के वे हैं, जो वचन सुनकर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं।"

इफिसियों 2:1–5, "उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। इनमें हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर और मन की इच्छाएं पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे। परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उसने हम से प्रेम किया, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)।"

2 तीमुथियुस 2:25–26, "वह विरोधियों को नम्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे कि वे भी सत्य को पहिचानें, और इसके द्वारा उसकी इच्छा पूरी करने के लिये सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाएं।"

यहूदा दुष्टात्माग्रस्त था परन्तु अन्ततः चुनाव उसके हाथ में था। पाप का उत्तरदायित्व वही था।

लूका 22:3, "तब शैतान यहूदा में समाया, जो इस्करियोती कहलाता और बारह चेलों में गिना जाता था।"

यूहन्ना 6:70, "यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुना? तौभी तुम में से एक व्यक्ति शैतान है।"

यूहन्ना 13:2, "जब शैतान शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था कि उसे पकड़वाए।"

लूका 22:4–6, "उसने जाकर प्रधान याजकों और पहरुओं के सरदारों के साथ बातचीत की कि उसको किस प्रकार उनके हाथ पकड़वाए। वे आनन्दित हुए, और उसे रुपये देने का वचन दिया। उसने मान लिया, और अवसर ढूंढ़ने लगा कि बिना उपद्रव के उसे उनके हाथ पकड़वा दे।"

लूका 22:47–48, "वह यह कह ही रहा था कि देखो एक भीड़ आई, और उन बारहों में से एक जिसका नाम यहूदा था उनके आगे–आगे आ रहा था। वह यीशु के पास आया कि उसका चूमा ले। यीशु ने उससे कहा, "हे यहूदा, क्या तू चूमा लेकर मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है?"

प्रेरितों के काम 5:3, "पतरस ने कहा, "हे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े?"

मनुष्य के मन से बाहर पाप का दोष देना वास्तव में सुसमाचार से चूक जाना है। प्रेतमुक्ति की सेवा के संबन्ध में नया नियम स्पष्ट कहता है कि मन फिरानेवाले विश्वासी को शैतान के लिए छोड़ दो।

1 कुरिन्थियों 5:5, "शरीर के विनाश के लिये शैतान को सौंपा जाए, ताकि उसकी आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए।"

1 तीमुथियुस 1:18–20, " हे पुत्र तीमुथियुस, उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो पहले तेरे विषय में की गई थीं, मैं यह आज्ञा सौंपता हूं कि तू उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रहे, और विश्वास और उस अच्छे

विवेक को थामे रहे, जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वास रूपी जहाज डूब गया। उन्हीं में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं, जिन्हें मैं ने शैतान को सौंप दिया कि वे परमेश्वर की निन्दा करना न सीखें।"

अब इन सावधानियों के साथ हम नैतिक बुराई का सामना कैसे करें? शैतान हमें ललचाकर पाप करवाना चाहता है, हमारा नाश करना चाहता है। हम नैतिक जीवन में प्रभाव डालनेवाले शैतान के सामर्थ्य को पहचानें। वह हमें फाड़ खानेवाला सिंह है। हमें व्यक्तिगत मन फिराव के उत्तरदायित्व पर ध्यान देना है। हमें परमेश्वर की क्षमा, उसके सामर्थ्य के लिए पुकारना है, उसके वचन को थामना है, उसकी धार्मिकता में स्थिर रहना है। उसकी धार्मिकता में चलना है और सदैव प्रार्थना में रहना है। यह आत्मिक युद्ध है।

प्राकृतिक बुराई के विषय आप क्या कहेंगे?

किसी को लकवा मार गया, किसी को तेज़ बुखार है तो क्या वे दुष्टात्माग्रस्त हैं? क्या यह संभव है? निश्चय ही संभव है। अब हम क्या करें? यीशु की प्रतिक्रिया कैसी थी? रोग और कष्ट से दुःखी मनुष्यों के साथ व्यवहार करने के विषय में प्रभु यीशु क्या कहता है?

प्रेरितों के काम 5:14–16, "विश्वास करनेवाले बहुत से पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे। यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे कि जब पतरस आए, तो उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए। यरूशलेम के आस–पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे।"

परमेश्वर सुसमाचार को प्रभावित करने के लिए और अपनी महिमा के निमित्त मनुष्यों को रोगमुक्त करता है। हमें किसी की रोगमुक्ति के लिए क्या करना चाहिए? प्रार्थना करें। कष्ट निवारण के लिए प्रार्थना करें। प्राकृतिक आपदा के समय प्रार्थना करें।

मरकुस 9:14–29, "जब वह चेलों के पास आया, तो देखा कि उनके चारों ओर बड़ी भीड़ लगी है और शास्त्री उनके साथ विवाद कर रहें हैं। उसे देखते ही सब बहुत ही आश्चर्य करने लगे, और उसकी ओर दौड़कर उसे नमस्कार किया। उसने उनसे पूछा, "तुम इन से क्या विवाद कर रहे हो?" भीड़ में से एक ने उसे उत्तर दिया, "हे गुरु, मैं अपने पुत्र को, जिसमें गूंगी आत्मा समाई है, तेरे पास लाया था। जहां कहीं वह

उसे पकड़ती है, वहीं पटक देती हैः और वह मुंह में फेन भर लाता, और दांत पीसता, और सूखता जाता है। मैं ने तेरे चेलों से कहा था कि वे उसे निकाल दें, परन्तु वह निकाल न सके।" यह सुनकर उसने उनसे उत्तर देके कहा, "हे अविश्वासी लोगों, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? और कब तक तुम्हारी सहूंगा? उसे मेरे पास लाओ।" तब वे उसे उसके पास ले आएः और जब उसने उसे देखा, तो उस आत्मा ने तुरन्त उसे मरोड़ा; और वह भूमि पर गिरा, और मुंह से फेन बहाते हुए लोटने लगा। उसने उसके पिता से पूछा, "इसकी यह दशा कब से है?" उसने कहा, "बचपन से। उसने इसे नष्ट करने के लिये कभी आग और कभी पानी में गिराया; परन्तु यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर तरस खाकर हमारा उपकार कर।" यीशु ने उससे कहा, "यदि तू कर सकता है?" यह क्या बात है! विश्वास करनेवाले के लिये सब कुछ हो सकता है।" बालक के पिता ने तुरन्त गिड़गिड़ाकर कहा, "हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास का उपाय कर।" जब यीशु ने देखा कि लोग दौड़कर भीड़ लगा रहे हैं, तो उसने अशुद्ध आत्मा को यह कहकर डांटा, "हे गूंगी और बहिरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूं, उसमें से निकल आ, और उसमें फिर कभी प्रवेश न करना।" तब वह चिल्लाकर और उसे बहुत मरोड़ कर, निकल आई; और बालक मरा हुआ सा हो गया, यहां तक कि बहुत लोग कहने लगे कि वह मर गया। परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया, और वह खड़ा हो गया। जब वह घर में आया, तो उसके चेलों ने एकान्त में उस से पूछा, "हम उसे क्यों न निकाल सके?" उसने उनसे कहा, "यह जाति बिना प्रार्थना किसी और उपाय से नहीं निकल सकती।"

रोगमुक्ति के लिए प्रार्थना करें। सुसमाचार विस्तार के लिए प्रार्थना करें।

प्रेरितों के काम 19:11–12, "परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामर्थ्य के अनोखे काम दिखाता था। यहां तक कि रूमाल और अंगोछे उसकी देह से स्पर्श करा कर बीमारों पर डालते थे, और उनकी बीमारियां जाती रहती थीं; और दुष्टात्माएं उनमें से निकल जाया करती थीं।"

प्रेरितों के काम 8:4–8, "जो तितर–बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे; और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकवे के रोगी और लंगड़े भी अच्छे किए गए; और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया।"

सुसमाचार विस्तार, सेवा की सफलता, और परमेश्वर की महिमा के लिए, हे प्रभ यह कर। उदाहरणः

प्रेरितों के काम 3:6–10, "तब पतरस ने कहा, "चांदी और सोना तो मेरे पास है नहीं, परन्तु जो मेरे पास है वह तुझे देता हूं; यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।" और उसने उसका दाहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया; और तुरन्त उसके पांवों और टखनों में बल आ गया। वह उछलकर खड़ा हो गया और चलने–फिरने लगा; और चलता, और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उनके साथ मन्दिर में गया। सब लोगों ने उसे चलते फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते देखकर, उसको पहचान लिया कि यह वही है जो मन्दिर के 'सुन्दर' फाटक पर बैठ कर भीख मांगा करता था; और उस घटना से जो उसके साथ हुई थी वे बहुत अचम्भित और चकित हुए।"

प्रेरितों के काम 3:16, "और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ्य दी है। उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसको तुम सब के सामने बिलकुल भला चंगा कर दिया है।"

प्रेरितों के काम 16:16–18, "जब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली जिसमें भावी कहनेवाली आत्मा थी; और भावी कहने से अपने स्वामियों के लिये बहुत कुछ कमा लाती थी। वह पौलुस के और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी, "ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं।" वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही; परन्तु पौलुस दुःखी हुआ, और मुड़कर उस आत्मा से कहा, "मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूं कि उसमें से निकल जा।" और वह उसी घड़ी निकल गई।"

रोगमुक्ति के विश्वास के साथ प्रार्थना करें।

याकूब 5:13–16, "यदि तुम में कोई दुःखी है, तो वह प्रार्थना करे। यदि आनन्दित हो, तो वह स्तुति के भजन गाए। यदि तुम में कोई रोगी है, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिये प्रार्थना करें, और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा; और यदि उसने पाप भी किए हों, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी। इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने–अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओः धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।"

विश्वास के साथ प्रार्थना करें। धर्मी जन की प्रार्थना में सामर्थ्य और प्रभाव होता है। राज्य आ पहुंचा है।

लूका 7:20–22, "उन्होंने उसके पास आकर कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे पास यह पूछने को भेजा है कि क्या आनेवाला तू ही है, या हम दूसरे की बाट देखें?" उसी घड़ी उसने बहुतों को बीमारियों और पीड़ाओं, और दुष्टात्माओं से छुड़ाया; और बहुत से अन्धों को आंखे दी; और उसने उनसे कहा, "जो कुछ तुम ने देखा और सुना है, जाकर यूहन्ना से कह दो; कि अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते–फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहिरे सुनते हैं, मुरदे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।"

यीशु द्वारा रोगमुक्ति स्वर्ग के राज्य का प्रतीक थी। वह प्रकट करता था, "मुझे रोगों पर अधिकार है।" मसीह के सामर्थ्य द्वारा परमेश्वर उसके राज्य के आगमन की पूर्व सूचना देता है।

2 कुरिन्थियों 12:7–9, "इसलिये कि मैं प्रकाशनों की बहुतायत से फूल न जाऊं, मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया गया, अर्थात् शैतान का एक दूत कि मुझे घूंसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊं। इसके विषय में मैं ने प्रभु से तीन बार विनती की कि मुझ से यह दूर हो जाए। पर उसने मुझ से कहा, "मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।" इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा कि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया करती रहे।"

क्या पौलुस देह के कांटें के कारण शैतान को झिड़कता था? उसे बांधा था? उसने परमेश्वर में विश्वास रखा। उसने उसके निवारण हेतु प्रार्थना की। परमेश्वर ने कहा, "मुझमें विश्वास रख। मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है।" यदि पौलुस उस दुष्टात्मा को निकालता तो परमेश्वर की योजना में बाधा उत्पन्न होती।

अतः प्रेतमुक्ति की आज्ञा धर्मशास्त्र में नहीं है। नैतिक बुराई के परिप्रेक्ष्य में मनुष्यों से आग्रह करें कि वे मन फिराएं और मसीह को ग्रहण करें। प्राकृतिक बुराई के लिए परमेश्वर से रोगमुक्ति की प्रार्थना करें, कष्ट निवारण की प्रार्थना करें। कष्टदायक आत्मा से मुक्ति की प्रार्थना करें।

क्या एक विश्वासी दुष्टात्माग्रस्त हो सकता है?

आत्मिक युद्ध के अभियान में अनेकों का उत्तर हैं, "हां।" "यदि विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा गंभीर सतत पाप से दुःखित हो और निर्लज्ज अवज्ञा से ठंडा पड़ जाए तो दुष्टात्मा घुस जाता है। विश्वासी

विश्वास की चाल से चूके तो पाप में गिर जाता है। यदि वह अंगीकार करके पाप त्याग न करे तो पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से वंचित होता है जो उसे दुष्टात्मा के प्रवेश से बचाता है। तब दुष्टात्मा प्रवेश करता है।"

वचन क्या कहता है? धर्मशास्त्र में दुष्टात्मा से ग्रस्त होना नहीं है परन्तु दुष्टात्मा द्वारा नियन्त्रण में रहना या प्रभावित रहना है। अब प्रश्न यह है, दुष्टात्मा का प्रभाव कितना हो सकता है? हमने देखा है कि विश्वासी मसीह का है जिसमें पवित्र आत्मा वास करता है। दुष्टात्मा विश्वासी का स्वामी नहीं हो सकता। स्वामित्व का विषय आपके मन में निश्चित किया जा चुका है। दुष्टात्मा न तो विश्वासी का स्वामी हो सकता है और न ही वह विश्वासी को अपने वश में कर सकता है।

कुलुस्सियों 1:13–14, "उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया, जिस से हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।"

2 कुरिन्थियों 6:14–16, "अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल–जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति? और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? और मूर्तियों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर का मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है, "मैं उनमें बसूंगा और उनमें चला फिरा करूंगा; और मैं उनका परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे।"

तथापि विश्वासियों पर उसका प्रभाव और प्रहार हो सकता है। लूका 4:2, "और शैतान उसकी परीक्षा करता रहा। उन दिनों में उसने कुछ न खाया और जब वे दिन पूरे हो गए, तो उसे भूख लगी।"

प्रेरितों के काम 5:3, "पतरस ने कहा, "हे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े?"

शैतान ने उसे झूठ बोलने पर बाध्य किया।

2 कुरिन्थियों 12:7, "इसलिये कि मैं प्रकाशनों की बहुतायत से फूल न जाऊं, मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया गया, अर्थात् शैतान का एक दूत कि मुझे घूंसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊं।"

शाऊल को दुष्टात्मा दुःख पहुंचाता था। शैतान अपना स्थान बनाता है– इफिसियों 4:25–32, "इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं। क्रोध तो करो, पर पाप मत करो; सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे, और न शैतान को अवसर दो। चोरी करनेवाला फिर चोरी न करे, वरन् भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करे, इसलिये कि जिसे प्रयोजन हो उसे देने को उसके पास कुछ हो। कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उससे सुननेवालों पर अनुग्रह हो। परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है। सब प्रकार की कड़वाहट, और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा, सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए। एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।"

दुष्टात्मा से ग्रस्त होने के समर्थक मत्ती 4, इफिसियों 4, 2 कुरिन्थियों 6, मरकुस 5 को संयोजित करके कहते हैं, "पहले दुष्टात्मा हमें ललचाता है और हम परीक्षा में गिरकर शैतान को स्थान देते हैं जहां वह अपना गढ़ बना लेता है। यह गढ़, आपको दुष्टात्माग्रस्त कर देता है।"

परन्तु धर्मशास्त्र में कहीं भी विश्वासी में से दुष्टात्मा निकालने का उदाहरण नहीं है। प्रभु यीशु और प्रेरितों ने जब जब दुष्टात्माएं निकालीं वे अन्यजातियों में था। अतः विश्वासी में दुष्टात्मा कभी नहीं घुसता है।

क्या हमें दुष्टात्मा से बात करना चाहिए?

धर्मशास्त्र स्पष्ट कहता है कि न तो दुष्टात्माओं से और न उसकी सिद्धि करनेवालों से संबन्ध रखें।

लैव्यव्यवस्था 19:31, "ओझाओं और भूत साधने वालों की ओर न फिरना, और ऐसों को खोज करके उनके कारण अशुद्ध न हो जाना; मै तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।"

2 राजा 21:6, "फिर उसने अपने बेटे को आग में होम करके चढ़ाया, और शुभ–अशुभ मूहुर्त्तों को मानता, और टोना करता, और ओझों और भूत सिद्धिवालों से व्यवहार करता था। उसने ऐसे बहुत से काम किए जो यहोवा की दृष्टि में बुरे हैं, और जिनसे वह क्रोधित होता है।"

2 राजा 23:24, "फिर ओझे, भूतसिद्धिवाले, गृहदेवता, मूरतें और जितनी घिनौनी वस्तुएं यहूदा देश और यरूशलेम में जहां कहीं दिखाई पड़ीं, उन सभों को योशिय्याह ने इस विचार से नष्ट किया, कि व्यवस्था की जो बातें उस पुस्तक में लिखी थीं जो हिलकिय्याह याजक को यहोवा के भवन में मिली थी, उनको वह पूरी करे।"

यशायाह 8:19–20, "जब लोग तुम से कहें, "ओझाओं और टोन्हों के पास जाकर पूछो जो गुनगुनाते और फुसफुसाते हैं," तब तुम यह कहना, "क्या प्रजा को अपने परमेश्वर ही के पास जाकर न पूछना चाहिये? क्या जीवतों के लिये मुर्दों से पूछना चाहिये?" व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा किया करो! यदि वे लोग इन वचनों के अनुसार न बोलें तो निश्चय उनके लिये पौ न फटेगी।"

धर्मशास्त्र में धोखा करनेवाली आत्माओं से सावधान किया गया है।

1 तीमुथियुस 4:1, "परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आनेवाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे।"

यहूदा 1:8–10, "उसी रीति से ये स्वप्नदर्शी भी अपने–अपने शरीर को अशुद्ध करते, और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं, और ऊंचे पदवालों को बुरा भला कहते हैं। परन्तु प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने, जब शैतान से मूसा के शव के विषय में वाद–विवाद किया, तो उसको बुरा–भला कहके दोष लगाने का साहस न किया पर यह कहा, "प्रभु तुझे डांटे।" पर ये लोग जिन बातों को नहीं जानते उनको बुरा–भला कहते हैं, पर जिन बातों को अचेतन पशुओं के समान स्वभाव ही से जानते हैं, उनमें अपने आप को नष्ट करते हैं।"

प्रभु यीशु ने सदैव उन्हें चुप रहने की आज्ञा दी।

मरकुस 1:34, "उसने बहुतों को जो नाना प्रकार की बीमारियों से दुःखी थे, चंगा किया, और बहुत सी दुष्टात्माओं को निकाला; और दुष्टात्माओं को बोलने न दिया, क्योंकि वे उसे पहचानती थीं।"

लूका 4:41, "और दुष्टात्माएं भी चिल्लाती और यह कहती हुई कि, "तू परमेश्वर का पुत्र है," बहुतों में से निकल गईं। पर वह उन्हें डांटता और बोलने नहीं देता था, क्योंकि वे जानते थीं कि वह मसीह है।"

मत्ती 8:16, "जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएं थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया9 और सब बीमारों को चंगा किया।"

दुष्टात्माओं को नाम देने के विषय धर्मशास्त्र क्या कहता है? जैसे क्रोध, घमण्ड, लालसा आदि। मरकुस 5:9 में यीशु ने दुष्टात्मा का नाम पूछा था, "उसने उससे पूछा, "तेरा क्या नाम है?" उसने उससे कहा, "मेरा नाम सेना है; क्योंकि हम बहुत हैं।"

वह नाम नहीं, संख्या थी। अतः हम मरकुस 5:9 से अनेक बातें खोजने में समय न लगाएं।

दुष्टात्माओं को बांधने के लिए धर्मशास्त्र क्या कहता है?

मत्ती 12:29, "या कैसे कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहले वह उस बलवन्त को न बांध ले? तब वह उसका घर लूट लेगा।"

यहां बलवन्त शैतान है और घर संसार है। उसकी संपदा मनुष्य है जिन्हें प्रभु यीशु बचाता है। यीशु बांधता है यह क्रूस पर प्रभु यीशु के काम का दृष्टान्त है। इसका अर्थ दुष्टात्मा बांधना नहीं है।

मत्ती 16:16–20, "शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगाः और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।" तब उस ने चेलों को चिताया कि किसी से न कहना कि मैं मसीह हूं।"

मत्ती 18:15–20, "यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा लिया। यदि वह न सुने, तो एक या दो जन को अपने साथ और ले जा, कि 'हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से निश्चित की जाए।' यदि वह उनकी भी न माने, तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने तो तू उसे अन्यजाति और महसूल

लेनेवाले जैसा जान। "मैं तुम से सच कहता हूं, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा। फिर मैं तुम से कहता हूं, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे मांगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए हो जाएगी। क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं।"

इन दो बाइबल अंशों के आधार पर कुछ विश्वासियों का कहना है कि हमें दुष्टात्माएं बांधना हैं परन्तु वे वास्तव में विश्वासियों के समुदाय के विषय है। मनुष्य तो इस समुदाय में है या इससे बाहर है न कि दुष्टात्मा भीतर है और बाहर है। ये गद्यांश कलीसिया के अधिकार और अनुशासन की चर्चा करते हैं।

अब शहरों, क्षेत्रों, आदि को आत्माओं के अधीन करने के विषय क्या कह सकते हैं? दानिय्येल 10 में इसका उल्लेख है परन्तु न तो प्रभु यीशु ने और न ही यूहन्ना, पतरस, याकूब और पौलुस ने ऐसा किया था।

आत्मिक युद्ध में बातें करने के विषय धर्मशास्त्र क्या कहता है? आत्मिक युद्ध प्रार्थना है। आत्मा में प्रार्थना करो– हर अवसर पर, हर निवेदन के लिए। प्रेरित केवल सुसमाचार सुनाते थे, आत्माओं को नहीं बांधते थे। वे प्रार्थना करते थे, "सुसमाचार का साहसपूर्वक प्रचार करने के लिए हे परमेश्वर, हमारी सहायता कर।" तदोपरान्त वे जान लगाकर सुसमाचार प्रचार करते थे। यह आत्मिक युद्ध है।

परमेश्वर से प्रार्थना करें, दुष्टात्मा से नहीं। वे कहते हैं, "यीशु के नाम में मैं तुझे कहता हूं निकल जा। इस व्यक्ति से तेरा काम नहीं।" धर्मशास्त्र में यह कहां है? क्या ऐसी प्रार्थना बाइबल में है? ऐसी प्रार्थना किसको संबोधित करती है? दुष्टात्मा को! परमेश्वर से ही प्रार्थना करें जिसे सब दुष्टात्माओं पर अधिकार है। आपको अधिकार नहीं कि प्रभु यीशु के लहू को सर्वत्र छिड़कें। केवल परमेश्वर ही उसके लहू को पापों की क्षमा के लिए काम में लेता है। अय्यूब को कष्ट देनेवाली दुष्टात्मा किसी ने नहीं निकाली क्योंकि वह परमेश्वर के उद्देश्य निमित्त था।

क्या हम किसी स्थान या मनुष्य से दुष्टात्माग्रस्त हो सकते हैं?

किसी ने मुझसे कहा कि आप अपने दत्तक पुत्र में से उसके पूर्वजों की आत्माओं को निकाल देना। क्या बाइबल ऐसा कहती है?

निर्गमन 20:5 में पूर्वजों की आत्मा का उल्लेख है, "तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूं।"

परन्तु वह पाप के परिणाम और दण्ड को व्यक्त करने के लिए है। क्या आपके पाप आपके बच्चों पर बुरा प्रभाव डालते हैं? निश्चय ही, हां। परन्तु विश्वासी अपने पूर्वजों से दुष्टात्मा नहीं पाता है। बाइबल में न तो पारिवारिक आत्मा का न ही पूर्वजों की आत्मा की चर्चा है।

कुछ लोग मत्ती 12 के संदर्भ में कहते हैं कि यदि समय पर दुष्टात्मा नहीं निकाली गई तो उनकी संख्या बढ़ जाएगी परन्तु उसका अर्थ यह नहीं है।

मत्ती 12:43–45, "जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ती फिरती है, और पाती नहीं। तब कहती है, 'मैं अपने उसी घर में जहां से निकली थी, लौट जाऊंगी।' और लौटकर उसे सूना, झाड़ा–बुहारा और सजा–सजाया पाती है। तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे उसमें पैठकर वहां वास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है। इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी हो होगी।"

इसका अर्थ है कि मन न फिराया तो मनुष्य नष्ट हो जाएगा। प्रभु यीशु इस्राएल को अन्तिम दण्ड की चेतावनी दे रहा है, न कि समय समय दुष्टात्मा निकालने का सुझाव दे रहा है।

यदि धर्मशास्त्र से हटकर मुझे कुछ अनुभव हों तो?

हम सब को कभी न कभी ऐसा अनुभव होता है जिसकी धर्मशास्त्र में व्याख्या नहीं है और मुझे पूरा विश्वास है कि आपने ऐसा देखा होगा, अनुभव किया होगा, या आपको अनुभूति हुई होगी और यह सच है कि हमारे चारों ओर आत्मिक शक्तियां काम कर रही हैं। परन्तु महत्वपूर्ण बात तो यह है, आप धर्मशास्त्र के आधार पर कैसे प्रतिक्रिया दिखाएंगे? मेरा सुझाव यह है कि पहले तो आप आत्मिक संसार के प्रति उदासीन न रहें। इस संदर्भ में मैं कुछ बातों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

आत्मिक संसार वास्तविक है परन्तु आपको परमेश्वर के लिखित वचन के प्रति विवेकी रहना है। अपने अनुभवों को परमेश्वर के वचन के माध्यम से समझें। यहां मैं आपको सावधान करना चाहता हूं कि आप आत्माओं के प्रकट होने के संबन्ध में आवश्यकता से अधिक अपेक्षा न करें क्योंकि अपेक्षाएं कैसा भी प्रकाशन प्रदान कर सकती हैं और यह सच है। दुष्टात्माओं की प्रतीति करनेवालों को दुष्टात्माओं का प्रकाशन वैसा ही प्राप्त होगा जैसा दुष्टात्माओं में विश्वास करनेवालों को होता है।

मेरा अनुभव यह है कि प्रेतमुक्ति का एक निश्चित समय होता है। हमें अत्यधिक सावधान रहना है। अतः दुष्टात्माओं के प्रकटीकरण की अपेक्षा के प्रति अति सावधान रहें और हां, पाप के प्रति व्यक्तिगत उत्तरदायित्व को कम करने की भूल न करें। इसके साथ ही शैतानी युक्तियों से भी सावधान रहें जो हमें प्रभु यीशु के सुसमाचार या परमेश्वर के वचन से अलग ले जाती हैं। सुसमाचार पर अपना ध्यान केन्द्रित रखें और सत्य तथा वचन में प्रकाशित प्रभु यीशु के सामर्थ्य में विश्वास रखें।

मेरे जीवन में ऐसा भी हुआ है कि कभी कभी जब मैं ने अपने आत्मिक आचरण में परमेश्वर की महिमा के निमित्त प्रचार करने की तैयारी की तो मुझे अपने भीतर घोर आत्मिक युद्ध का बोध हुआ और मैं सोचने लगा कि धर्मशास्त्र मुझे नहीं बताता है कि कुछ बातें कहां से होती हैं, क्यों होती हैं, उनके विषय मैं जिज्ञासा प्रकट करूं। मैं यह तो नहीं जानता कि शैतान इन बातों के पीछे है परन्तु यह अवश्य जानता हूं कि आत्मिक युद्ध में मेरे साथ या किसी के भी साथ जो होता है, वह परमेश्वर प्रभुता के क्षेत्र के बाहर है। मेरा उत्तरदायित्मव उनको निकालना या बांधना नहीं है। मेरा उत्तरदायित्व है परमेश्वर को दण्डवत् करना, उसके वचन को मानना और परमेश्वर की आज्ञाकारिता में दीन होकर चलना तथा हर एक अनुभव में उसमें विश्वास रखना। रोगावस्था में उसमें विश्वास करना। अवर्णित घटनाओं में उसमें विश्वास करना और सब बातों के द्वारा उसके अधिकाधिक निकट आना। मैं ने तो यही देखा है कि किसी घटना में यह निश्चित करना कि वह दुष्टात्मा का काम है महत्वहीन है। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि मैं घटनाओं में कैसा व्यवहार करता हूं। कहने का अर्थ है कि क्या हो रहा है, उसे जानने से अधिक महत्वपूर्ण है मैं उसमें कैसा व्यवहार करता हूं। यह आत्मिक युद्ध है।

अन्त में कुछ चुनौतियां

आत्मिक युद्ध में अन्तिम मुठभेड़ की प्रतीक्षा करें...

अन्त में हमें क्या करना चाहिए? पहली चुनौती, इस आत्मिक युद्ध में अन्तिम मुठभेड़ की प्रतीक्षा करें। प्रकाशितवाक्य 12 में मीकाईल अपने स्वर्गदूतों की सेना के साथ शैतान की सेना पर जय पाने निकलता है। प्रकाशितवाक्य 12:7–12, "फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले; और अजगर और उनके दूत उससे लड़े, परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिये फिर जगह न रही। तब वह बड़ा अजगर अर्थात् वही पुराना सांप जो इब्लीस और शैतान कहलाता है और सारे संसार का भरमानेवाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया, और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए। फिर मैं ने स्वर्ग पर से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, "अब हमारे परमेश्वर का उद्धार और सामर्थ्य और राज्य और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है, क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया करता था, गिरा दिया गया। वे मेम्ने के लहू के कारण और अपनी गवाही के वचन के कारण उस पर जयवन्त हुए, और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहां तक कि मृत्यु भी सह ली। इस कारण हे स्वर्गो और उनमें रहनेवालो, मगन हो; हे पृथ्वी, और समुद्र, तुम पर हाय! क्योंकि शैतान बड़े क्रोध के साथ तुम्हारे पास उतर आया है, क्योंकि जानता है कि उसका थोड़ा ही समय और बाकी है।"

भाइयों और बहनों, वह दिन आता है जब प्रभु यीशु का राजा रूप में महिमान्वन होगा और स्वर्ग की पुकार होगी, "परमेश्वर का उद्धार यहां है। उद्धार पूरा हुआ।" परमेश्वर का सामर्थ्य यहां होगा। राजा का सामर्थ्य अपने पूरे बल में होगा और यहां परमेश्वर का राज्य होगा। मसीह यीशु का राज्य जिसकी लम्बे समय से प्रतीक्षा की जा रही है, यहां होगा और मसीह राजा होगा। मसीह यीशु राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु होगा। शैतान की हार निश्चित है। अदन की वाटिका का वह सर्प, वह महान बैरी, विश्वासियों का दोष लगानेवाला नष्ट किया जाएगा। उस समय उसका दोषारोपण अमान्य होगा वरन् उसी पर दोष लगाया जाएगा। प्रभु यीशु को राजा का सम्मान मिलेगा और शैतान नरक में डाला जाएगा और कलीसिया विजयी होगी। कलीसिया जय पानेवालों का समूह है। कलीसिया ने जय कैसे पाई? क्रूस पर बहाए गए प्रभु यीशु के लहू के द्वारा। क्रूस पर बहाए गए प्रभु यीशु के लहू के कारण शैतान का दोषारोपण व्यर्थ होता है। मसीह की शान्ति सदा की है।

प्रकाशितवाक्य 7:12, "आमीन! हमारे परमेश्वर की स्तुति और महिमा और ज्ञान और धन्यवाद और आदर और सामर्थ और शक्ति युगानुयुग बनी रहें। आमीन!"

इसे सदा स्मरण रखें और इसके साथ ही यह भी कि इस कार्य में विश्वासियों ने जान की आहुति चढ़ाई है। इस सत्य को अन्तर्ग्रहण कर लें कि आत्मिक युद्ध में सुरक्षित रखे गए पवित्र जन प्रेतमुक्ति, मन्त्र जाप,

अनुष्ठानों या दुष्टात्माओं को झिड़कने के कारण जयवन्त नहीं हुए हैं। उनके जय पाने का कारण है सुसमाचार प्रचार के निमित्त अपनी जीवन अर्पित करना।

अब विश्व में हमारे भाइयों और बहनों के बारे में सोचें। सताए गए विश्वासी मसीह के कष्टों में सहभागी होते हैं और मसीह के साथ ऐसे जुड़ जाते हैं कि मसीह का जीवन उनका जीवन हो जाता है परन्तु यह भी स्मरण रखें कि प्रकाशितवाक्य 12 के अनुसार वे शैतान को हराने में भी सहभागी हैं। शैतान उन्हें सताकर आनन्दित होता है तो वास्तव में वह उनके अनन्त आनन्द और अपने अनन्त विनाश में आनन्दित होता है। "हे शैतान, विश्वासियों को सता, उन्हें मरवा दे परन्तु एक दिन वे तुझ पर जयवन्त होंगे। तू गिराया जाएगा। वे अनन्त आनन्द के वारिस होंगे और तू अनन्त विनाश का।"

यीशु ने कहा कि शैतान से मत डरो वह तुम्हें इस जीवन में मार सकता है। संसार में इससे अधिक कुछ नहीं परन्तु इसके बाद आप अनन्त आनन्द पानेवालों के समूह में होंगे जब शैतान गिराया जाएगा। मार्टिन लूथर ने कहा, "ज्यों ही परमेश्वर का वचन आपके द्वारा प्रचार किया जाता है त्यों ही शैतान आप पर वार करेगा और अपनी युक्तियों द्वारा आपको परमेश्वर के वचन की खोज करना और उससे प्रेम करना सिखाएगा क्योंकि मैं स्वयं अपने धर्मगुरुओं का ऋणी हूं जिन्होंने उसका सामना किया। 'उन्हें कोटी कोटी प्रमाण कि उन्होंने मुझे शैतानी क्रोध से डराया, धमकाया कि परिणामस्वरूप मैं एक अच्छा बाइबल ज्ञाता बना और उन्हीं के कारण मैं ने वह लक्ष्य प्राप्त किया जो मैं अन्यथा प्राप्त नहीं कर पाता।" शैतान के कारण वह एक अच्छे बाइबल ज्ञाता बने थे। शैतान के काम अन्ततः परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने में सहायक होते हैं। अतः क्रूस के द्वारा परमेश्वर के पुत्र को हराने की शैतान की युक्ति ने मनुष्य के पुत्रों को उद्धार दिलाया। अतः इस आत्मिक युद्ध की प्रतीक्षा में रहें।

इस आत्मिक युद्ध के अन्त के निमित्त अपने सर्वस्व के साथ जीएं...

यह दूसरी चुनौती है। इस युद्ध का अन्त कब होगा? मत्ती 24:9–14, "तब वे क्लेश देने के लिये तुम्हें पकड़वाएंगे, और तुम्हें मार डालेंगे, और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे। तब बहुत से ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे को पकड़वाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे। बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे। अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा पड़ जाएगा। परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।"

इस प्रश्न का उत्तर केवल पिता परमेश्वर जानता है तथापि मत्ती 24 में इसका संकेत मिलता है– मत्ती 24:14, "और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।"

यह परमेश्वर का लक्ष्य है। हर एक जाति में सुसमाचार पहुंचे। प्रभु यीशु का महान आदेश भी यही था। यहां "जाति" से परमेश्वर का अभिप्राय क्या है, हम नहीं जानते। हम तो इतना ही जानते हैं कि विश्व में 11,690 जनजातियां हैं जिनमें से 6,400 जनजातियों में दो प्रतिशत से कम विश्वासी हैं अर्थात जहां सुसमाचार नहीं पहुंचा है वे हैं 5,845 जनजातियां। वहां सुसमाचार पहुंचाने में कोई भी प्रयासरत नहीं है। अब ये जनजातियां हम नहीं जानते की प्रभु यीशु की परिभाषा से मेल खाती हैं या नहीं परन्तु यह तो निश्चित है कि शैतान ने यह पद अपनी दीवारों पर लिखा हुआ है क्योंकि वह उसके विनाश की घंटी है। अतः वह सुसमाचार प्रचार रोकने में यथाशक्ति प्रयासरत है।

अतः कलीसिया, हम परमेश्वर के लक्ष्य के निमित्त सचते हो जाएं और परमेश्वर प्रसारण आरंभ कर दे। इसमें आपको अपनी पूर्ण हानि उठाना पड़ेगी। शैतान इस समय को यथासंभव अधिक से अधिक बढ़ाना चाहता है। इस काम में आपका विरोध शैतान की सेना करेगी। यीशु ने कहा है कि हमसे संसार घृणा करेगा। स्थिर रहना बहुत कठिन होगा। परन्तु हमारे पास प्रभु यीशु के लौट आने की प्रतिज्ञा है और हम हर एक जाति, भाषा, गोत्र के समूह का एक भाग बन जाएंगे। यीशु ने कहा, "मनुष्य सुसमाचार की प्रतीक्षा में हैं और मैं उन्हें अपनी ओर आकर्षित करता हूं। उन्हें सुसमाचार सुनाओ।"

यहां हमें ध्यान रखना है कि हम बैरी की सेना को हराने नहीं निकले हैं। यूहन्ना 10 में यीशु कहता है, "मेरे और भी भेड़ें हैं जो इस झुण्ड की नहीं।" प्रेरितों के काम की पुस्तक अध्याय 18 में पौलुस कुरिन्थ के विश्वासियों से कहता है कि नगर में अन्य अनेक उसकी प्रतीक्षा में हैं। परमेश्वर अनेक जातियों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है और हमें उनमें सुसमाचार सुनाना है। हम युद्ध बन्दियों में सुसमाचार सुना रहे हैं क्योंकि वे परमेश्वर के हैं। वे उस दिन के लिए नियत हैं जब हर एक जाति, भाषा, गोत्र प्रभु यीशु की स्तुति करेगी। अतः हम उन तक पहुंचें और उस दिन की बाट जोहते रहें जब हम उसकी शान्ति और उसकी उपस्थिति में सदा सर्वदा के लिए होंगे। उस दिन युद्ध का अन्त हो जाएगा और विजय प्राप्त होगी तथा प्रभु राजा को उसकी महिमा प्राप्त होगी। यह आत्मिक युद्ध है, प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 में वर्णित युद्ध की प्रतीक्षा करें और उसके अनुकूल जीवन जीएं। इस युद्ध का अन्त करने के लिए जीएं।